वैदिक ऋचाओं में वायु–प्रदूषण का निदान

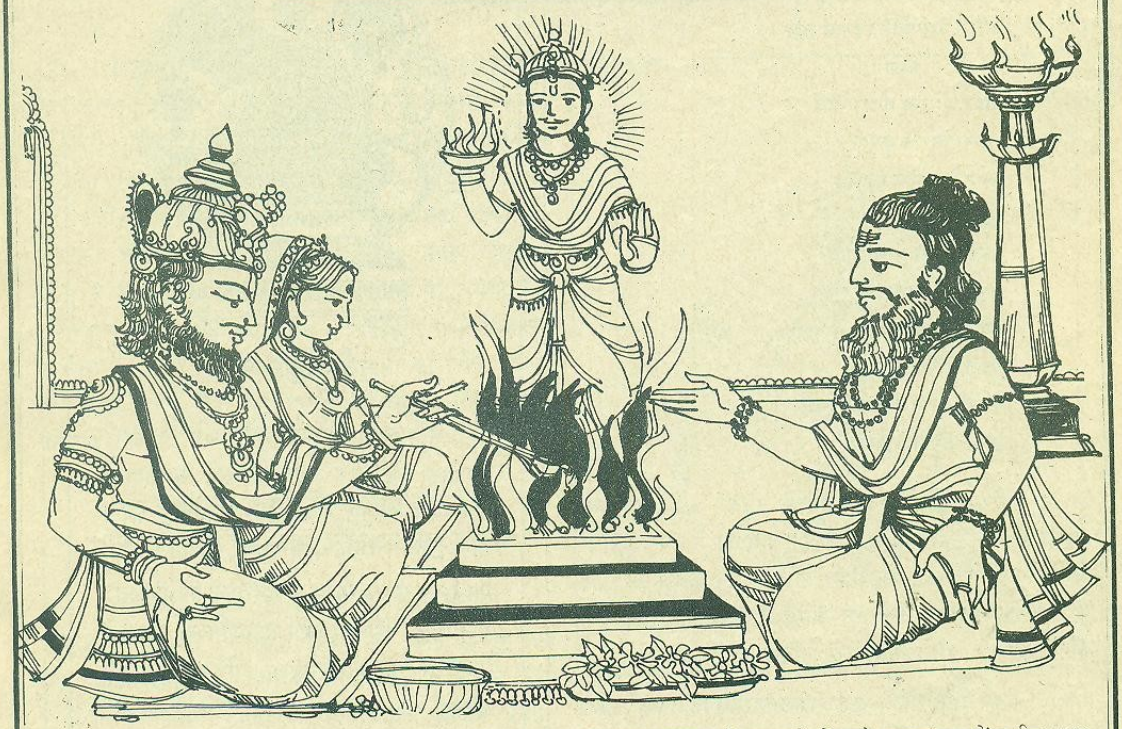

अन्धभौतिकवादी इस युग में वायु प्रदूषण निरन्तर बढ़ता जा रहा है, कल कारखानों के प्राचुर्य मे जहाँ देश की अर्थव्यवस्था मजबूत करने का प्रयास किया है, वहा बेरोजगारी बढ़ाने के साथ–साथ वायु को प्रदूषित बनाने में कोई कसर नही छोडी।

प्रदूषण का शाब्दिक अर्थ है प्रकृति के नित्य स्वरूप व गुणधर्म मे दूषण अर्थात बुराई। पर्यावरण और परिस्थिति में अदभुत परिवर्तन प्रदूषण की देन है। जल–वायु एवं वातावरण आदि में परिवर्तन ही प्रदूषण है। प्रदूषण में प्रकृति का संतुलन ही विकृत हो जाता है, यह एक ऐसी विकृति है जो मानवीय जीवन को जीने योग्य नही होती, यह एक ऐसी बुराई है जो न केवल मानव अपितु सम्पूर्ण प्राणिजगत से सम्बन्ध रखती है, यह प्रदूषण अनेक रुपों में देखने को मिलता है जैसे जल प्रदूषण, ताप प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, एवं वायु प्रदूषण आदि.

वायु प्रदूषण ने स्वच्छ वायु को समाप्त कर दिया है, कल कारखानों से निसृत धुवाँ प्रचुर मात्रा में कार्बन डाई ऑक्साइड और नायट्रोजन ऑक्साइड हवा में मिला रहा है। यह वायु प्रदूषण का ही प्रभाव है कि औद्योगिकी में जो नवीन क्रान्ति आई है, उसने भी वायु प्रदूषण फैलाया है जिससे वायुमंडल में महीन कण [श्यरोसोल] मिल गए हैं। जो वायु मंडल के निचले भाग में मंडराते रहते हैं जो न केवल आकाश को आकर्षित करते हैं, अपितु प्राणवायु को भी घातक बनाते हैं।

चाहे प्रदूषण वायु का हो या जल का, ध्वनिका हो या ताप का, पर्यावरण प्रदूषण का प्रभाव दो रुपों में पड़ता है– स्थानीय एवं विश्वव्यापी, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण का प्रभाव मुख्यतः स्थानीय पड़ता है। सामान्यतः प्रदूषण के प्रभावों को अनेक रुपों में देखा जाता है–जैसे जलवायु में परिवर्तन, प्राकृतिक असंतुलन, स्वास्थ्य संकट, मानसिक प्रदूषणादि, जल के दो अवयव हैं, जल और वायु, पर्यावरण में प्रदूषण फैलने से उष्मा बढ़ती है, जिसके फलस्वरुप वर्षा अधिक होती है एवं अतिवृष्टि से हमारा कृषि जगत प्रभावित होता है, जिससे जनता व प्राणीजगत अन्न संकट के कारण पीड़ित होता है, अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि, दोनों ही स्थितियाँ घातिनी हैं जिससे पृथ्वी की सतह गर्म बनी–रहती है परिणामस्वरूप उमस तथा घुटन पनपती रहती है, यही नहीं, प्राकृतिक असन्तुलन उत्पन्न हो जाता है, प्रकृति के हर पदार्थ या कण में अद्भुत संतुलन है। विगत अनेक

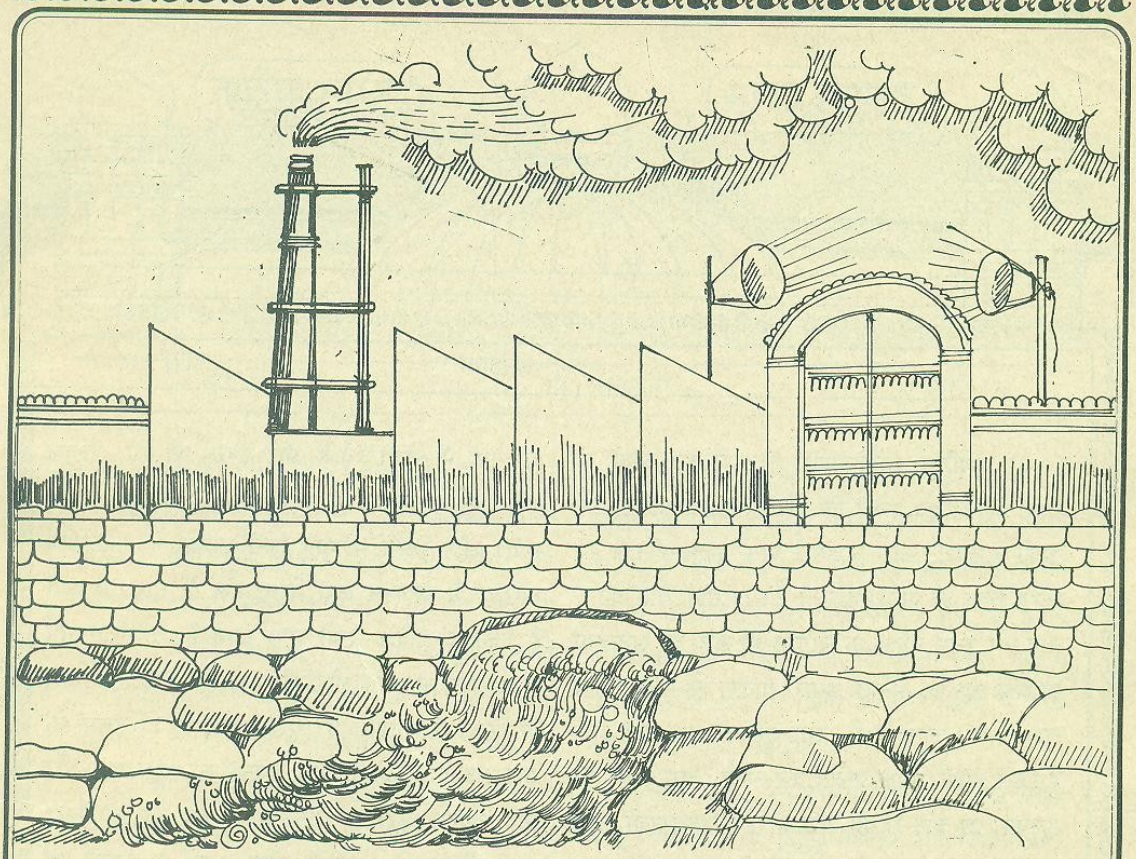

वर्षो से मानव ने आणविक विस्फोटों और औद्योगिक विकास की देन विभिन्न गैसों ने प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ दिया है। अब ऋतु में विपरीत ऋतु दिखाई देती है जिससे फलफूल, पौधे, एवं वनस्पतियाँ सभी प्रभावित हैं मानस के आनेजाने का समय बदलने से खाद्यान्नों के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। प्राणवायु में घातक गैसों के कारण मानवीय जीवन एवं स्वास्थ्य संकलग्रस्त दिखाई देता है।

इस प्रदूषण का कारण है वेद–पथं की विस्मृति। वैदिक – साहित्य में सर्वत्र मानवीय कल्याण, व प्राणिजगत के उत्थान की ऋचायें मिलती हैं जिनमें मानवीय जीवन को यज्ञमय बनाने का आग्रह किया है। यज्ञ यज शब्द धातु से निष्पन्न है जो त्याग का सूचक है। वैदिक साहित्य में यज्ञ अनेक प्रकार के हैं–

सोम यज्ञ – सोंमकलादिभिः त्रिवर्ष साध्यः, यह यज्ञ जीवन को अमृमय बनाने के लिए किया जाता है।

वाजपेय – वाजमन्ननं घृतं वा प्राधान्येन पेयमत्र इति वाजपेय, यह अन्न व घृत से पर्यावरण के परिष्कार हेतु किया जाता है।

विश्वजीत – यह संसार को जीत कर किया जाता है।

अग्निष्टोम – अग्नि में सुगन्धित पदार्थो को जला कर, प्राकृतिक सन्तुलन के लिए किया जाने वाला यज्ञ, अग्निष्टोम कहलाता है।

ज्योतिष्टोम – ज्ञान यज्ञ का प्रतीक

रूद्र यज्ञ – दुष्यें के विनाश के लिए किया जाने वाला यज्ञ।

राजसू यज्ञ,– लतात्मक सोम जिसमें कूटा जाये, और उसकी भी विशेषता जिसमें हो, वह राजसूय यज्ञ है।

अश्वमेध यज्ञ – परमेश्वर की आज्ञा पालन हेतु घी की आहुतियाँ देना।

इसी प्रकार गोमेध [अन्न, वाणी, पृथ्वी, पवित्र रखना] नरमेध, तथा सववेदस आदि यज्ञ प्रचलित है।

किंतु नित्य कर्तव्य कर्मो में पाँच प्रकार के यज्ञ बताये गये हैं

ऋषि यज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा
अतिंथि यज्ञं पितृयज्ञंच यथा शक्ति घ्यापपते ।

[मनुस्मृति ४/२७]

अर्थात् स्वाध्याय, स्तुति, प्रार्थना, उपासना, अग्निहोत्र, वलिवैश्वदेव यज्ञ, अतिथि यज्ञ तथा पितृयज्ञ यथाभक्ति सदा किया करें।

[क्रमशः]

❑ **डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी**
बरेली

वैदिक ऋचाओं में वायु–प्रदूषण का निदान

(गतांक से आगे)

नित्य यज्ञ का विधान केवल आध्यात्मिकता की ओर ले जाने वाला ही नही, अपितु भौतिक जगत का परिष्कार भी करता है। यज्ञ या हवन से दो प्रकार के लाभ वायु की शुध्दि से पर्यावरण प्रभावित होता है। वायु और जल के शुध्द रहने से ही अन्न और धन की वृध्दि होती है। मनुष्य की मानसिकता भी बाहरी वातावरण से प्रभावित होती है। राष्ट्र के शान्त वातावरण में ही सद्विचार ओर सत्साहित्य का सृजन होता है वस्तुतः तो संकल्पशक्ति के प्रबल होने से मानवीय क्षमता क्रियान्वित होती है, किन्तु कुछ सीमा तक शुध्द पर्यावरण से मानव का तन और मन, दोनों ही प्रभावित होते है।

वायु प्रदुषण केनिवारणार्थ वैदिक साहित्य में अनेक ऋचायें यथा– **मा सुनोतेति सोमम्** . श्र २/३०/९

मै नही कहता कि सोम को मत कूटो।

यज्ञेन कल्पनाम यजु १८/६

अर्थात त्याग का भी त्याग करना चाहिये।

यजुभिर्यजन्ति. अर्थात याजुत् मन्त्रों से कर्म करते हैं।

कर्मप्रधान वेद का आरम्भ कर्म प्रेरणा से हुआ है।

इर्षे त्वोर्जे त्वा . य १/१

इष्ट प्राप्ति तथा बल प्राप्ति ऊर्जा के लिए यज्ञ करना चाहिये,

अग्न भायाहि वीतये. सा. पू. १/१/१

सबको आगे ले जाने वाले हे प्रभो ! तू ज्ञान प्रकाश ! और भोगशोधन का उपदेश करता हुआ आ।

ईश्वर हरक्षण हमारे साथ है, किन्तु अज्ञान के कारण हम उसे देख नही पाते। अतः उससे विनय है कि वह हमारे हृदय का प्रदूषण रूपी अन्धकार हटाये, जिससे हम उसका प्रकाशस्वरूप पहचानें।

ता पुषस्व . श्र . २/१०२/१९/२०

ग्रह में स्थापित अग्नि प्रति सायं और प्रति प्रातः सुख का दाता है, जिसको प्रदीप्त कर हम शरीर को प्रकट बनायें तथा शतायु

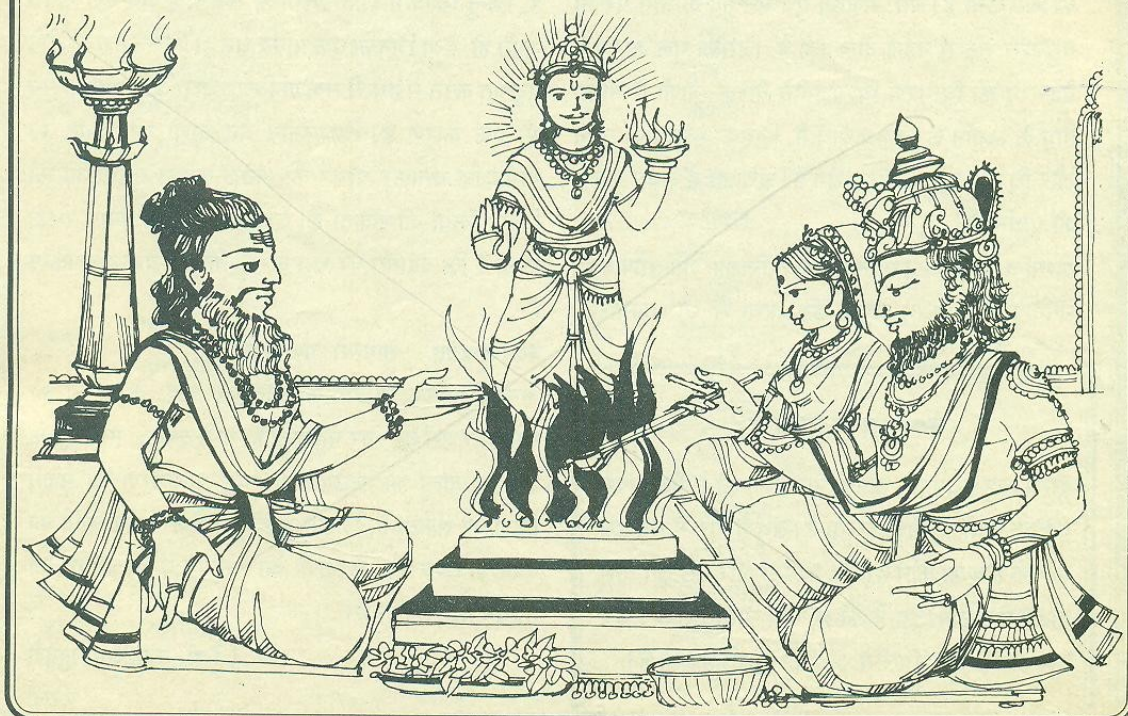

हों। अग्निहोत्र के लिए अनेकपदार्थो की अपेक्षा होती है – समिधा घृत सामग्री, यज्ञकुण्ड यज्ञपात्र, तथा दीपशलाका आदि से हमें यज्ञ अवश्य करना चाहिये। यदि विल्ब, खदिर व आम्रवृक्षादि की समिध यें नही मिले, जंगल से गिरी पड़ी लकडियाँ लाकर, उनसे ही यज्ञ नित्य करना चाहिये। वस्तुतः वैदिक धर्म यज्ञ प्रधान है, देवपूजा, संगतिकरण तथा दान यज्ञ हैं। यज्ञ कौन कर सकता है इस प्रश्न के उत्तर में यही कहा जा सकता है कि जो यम हो, स्वयं संयमी हो, तथा दूसरों को संयम से रखता हो, वही यज्ञ का अधिकारी है, दैनिक यज्ञ यदि पर्यावरण प्रदूषण का विनाश करता है। वहाँ यज्ञभावना मानसिक प्रदूषण का निदान है।

वर्तमान युग में मानव दोनों प्रकार के प्रदूषणों से ग्रस्त है, यही कारण है कि वह तन–मन और धन से रूग्ण है, यदि वह मानसिक स्वास्थ्य का इच्छुक है तो उसे यज्ञभावना विकसित करने के साथ–साथ पर्यावरण को विशुध्द बनाने हेतु दैनिक यज्ञ विधान को क्रियान्वित करना चाहिये जिससे जल–और वायु का अभिषापित प्रदूषण दूर हो। अन्यथा उसका जीवन भार रूप हो जायेगा। विश्व में सर्वत्र अशान्ति का बोलबाला है। धर्म, मजहब एवं मतबाद के नाम पर माँ वसुन्धरा रक्त से नहाई दीख रही है, जिसका मूल कारण है वेद–पथ का विस्मरण विश्वजनीन वैदिक–वाणी में मानव मात्र के उत्थान के लिए ऋचायें हैं, जिसका स्वाध्याय, मनन और चिन्तन करना, मानव धर्म है। ऋचाओं में सर्वत्र शान्ति की प्रार्थना है।

द्यौशान्ति, अन्तरिक्षग्वं शान्ति पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरौपाधयः।

शांन्तिपाठ के समय प्रभुक्त इस ऋचा में द्यौ, अन्तरिक्ष,

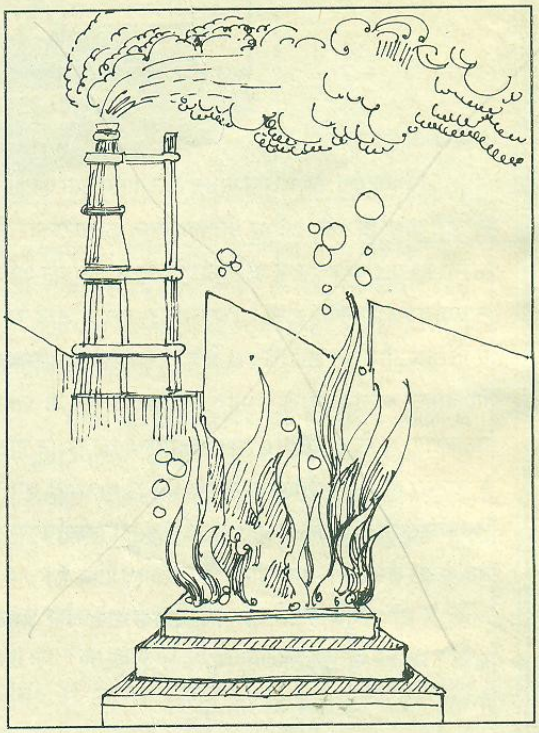

वनस्पतिजगत व औषधिजगत में, शान्ति हेतु प्रार्थना सर्वत्र है, किन्तु विश्व में शान्ति तभी हो सकती है जब एक मानव जाति हो, तथा जिनका एक मानव धर्म हो। जल और वायु को प्रदूषित करने में हमारी संकीर्ण विचारधारा और प्रदूषित मन भी एक कारण है। विश्वजनीन वेद वाणी को जीवन का मार्गदर्शक बनाकर संसार की अनेक जटिल समस्याओं का निदान किया जा सकता है। ऋचाओं के अन्तःप्रमाण से ही सिध्द है कि वेदमार्ग पर चल कर विनाश से बचा जा सकता है–

वेदमेवाभ्यसेत् – मार्गस्थो नावसीदति।

अन्य वैज्ञानिक उपायों के अतिरिक्त यज्ञः के महत्व को समझकर उसे घर–घर पहुँचाना है, तभी व्याकुल मानवता के प्रदूषित जालों का उच्छेद कर, स्वस्थ पर्यावरण का सृजन किया जा सकता है, जिससे पृथ्वी पर एक मानव जाति का एकछत्र राज्य हो, वेदवाणी का अनुपालन ही जीवन का उन्नयन कर सकता है।

❑ **डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी**
बरेली